# रामविनयबाटिका

जिसमें

सच्चिदानन्द आनन्दकन्द श्रीरामचन्द्रजीके विशेष रीतिसे अनेकप्रकारके रागोंके द्वारा अत्यन्त ललितपद वर्णन किये गये हैं ॥

जिसको

ज़िलारायबरेली परगना डालामऊ पँवार वंशोद्भव भवानीप्रसादात्मज जोहवै ग्रामाधीश जानकीप्रसादजीने अत्यन्त परिश्रमसे रागानुरागियोंके चित्तानन्दार्थ रचना किया ॥

द्वितीयबार


**लखनऊ**

मुंशी नवलकिशोर ( सी, आई, ई ) के छापेख़ाने में छपी

मई सन् १८९७ ई० ॥


हक़्क़तसनीफ़ महफ़ूज़है बहक़्क़ इस छापेख़ाने के ॥

२ जुज़ ३ वर्क़

# अथ रामविनयबाटिका ॥

तिलककमोदरागे त्योरताले ॥

जय गणनायक जगत विनायक शील सुभायकना-
यक सुजन सहायक जाहिर सुयश दिगन्त । भनै चहूं
श्रुति सुर नर लहैं न अन्त ॥ तेरी महिमा तूही जानै
वन्दौं चरण शरण सुखदायक साहब लायक दास सो
जानकी विघनहरन्त १ जै गणपति गणनाथ गजानन
गौरी सुत शम्भु सुत जै लम्बोदर वरदानी यकदन्त ।
कृपा करीजै दीजै सुमति अनन्त ॥ जाते रघुपति की-
रति गावै महा मोह जग विपति नशावै मनहिं रमावै
ध्यावै सदा जानकी कन्त २ ॥ अलहिया ता० ४ ॥ गणपति
गौरी गिरा गंग गिरिजेश शेश वन्दना रमेश करिसिया
शीशनाइये ॥ सियानाथ अंशते प्रशंसितहैं देवसब इष्ट
देव अंश जानि सर्व्वदेव ध्याइये १ मंगलके दाता देव
भेव सो लखाय दीजै जाते रघुराय यश मंगल बनाइये॥
गिद्ध गुह गणिका गजेन्द्र जे उबारे प्रभु सोई प्राणप्यारे
जूको विनय सुनाइये २ साहब हमारे सब विधि ते स-
वाँरे काम सांझ औ सकारे ताते जयतिमनाइये ॥ धन्य
प्रभुताई अरु दीनबन्धुताई प्रभु विरद बड़ाई धन्य
कहाँलों गनाइये ३ गाय गायथके शेश औ गणेशबानी
वेदहूं न जानी कछु अगम सो पाइये ॥ तदपि सनेह
यश गाय औ सुनाय यश जानकीप्रसाद सत सुधासिंधु

न्हाइये ४ काय मन बुद्धि के पवित्र हेत हेतकरि सुयश सुसेत भवसागर दृढ़ाइये॥ विना नाव करिया मलाह कीसलाह बिनु थाहलहि वाहगुरू उतरिसो जाइये५।३॥ खम्माचता० ४॥ शंकर शंकर करनहारे मेरे शिवशंकर भोलानाथ हाथगहि दीजिये बताय आय राह सियावरके शरण की १ साँवरे छबीले प्यारे सुन्दर रँगीले औ सुशीले राम जगत यशीले मोको तौ लखाय दीजै सेवा तिनके चरण की २ रामरस यशज्ञानी ध्यानी औढ़र ढरन दानी जानी विनती बखानी तबै करिये सो साँची बात तात औढ़र ढरण की ३ रावरी कृपा पवाँर साँझहूं सकार बारबार प्रेम दीपक सवाँरि साजि आरती करैंजू राम आरत हरण की ४।४॥ सिन्धु तिताला॥ गुरु गोविंद पद कमल ध्याय उर जय मनाय बलिजाई॥ जिनकी कृपा प्रेम पद रघुपति दिन दिन बढ़त सवाई १ करत भजन जन सदा मुदितमन बरनत विनयसुहाई॥ सजि सजि छन्द कमल पद भजि भजि नूतन नितहि सुनाई २ पावत सदा मनोगति अपनी धन्य कृपा अधिकाई॥ प्रभुता करी जानकी जनपर धन्य प्रभू प्रभुताई ३।५॥ पुनः॥ जगत जननि जय जनकनन्दनी जयति जगत करतारी॥ करौं वन्दना मातु तिहारी सुनिये अरजहमारी १ नहिं दूजी अवलम्ब मातु मोहिं सब विधि आश तिहारी॥ पाहि पाहि शरणागत माँगत हौं तुव द्वार भिखारी २ रघुपति सहित बसौ उर अन्तर निशि दिन साँझ सकारी॥ कृपा करौ करधरौ जानकी बाना विरद सँभारी ३।६॥ नटबिलाततिता-

ला ॥ नौमि भरत पद पङ्कज निशि दिन ॥ किये सिया पति प्रेम विवश जिन १ अहह नाथ अब कृपा करहु छिन ॥ देहु रमापति प्रेम छिनहि छिन २। ७॥ पुनः॥ नौमि रमापति बन्धु कृपाला ॥ धरणी धर जे दीन दयाला १ चहत पवाँर प्रेम पद पङ्कज ॥ जिनहिं सेवनित अमर शम्भुअज २ जाते लहौं प्रेम अधिकाई ॥ नाथ यतन सो देहु बताई ३। ८॥ पुनः॥ नौमिसदा भरताग्रज स्वामी ॥ मन गति जानत अन्तरयामी १ द्रवहु नाथ अब करहु न खामी ॥ देहु पवाँरहि राम गुलामी २। ६॥ पुनः॥ सेवक सुहृद सखा जे रामा ॥ सचिव संत सज्जन अभिरामा १ तिनहिं जानकी करतप्रणामा॥ रघुपति पदरति देहु ललामा २। १०॥ अथ हनुमत्स्तुतिः-धनाश्री खम्माचताल झपराग ॥ जयति कीशाधिपति अंजनी सूनु श्रीराम प्रिय वायुनन्दन प्रभो सच्चिदानन्द आनन्दकारी। दूत श्रीराम अभिराम आराम प्रद वीरता वीर हद विशद वरभक्ति पदकंज रामाधिकारी ॥ ज्ञानगंभीर निधि ध्यान विधिजान आजान भुजदंड परचंडबल ललित विरदावली विदित भारी। वज्र कर धरण उद्धरण जन जानकी त्राणकरु जयति हनुमान नित दान मान कामदे जय तिहारी १। ११॥ पुनः॥ कोटि रवि भास गौरांग सिंदूर सुंदर प्रभा जटित मणि मुकुटवर चंद्रिका शीश शोभाधिकारी। कलित बिबिकान जगमगति कुंडल कला आकरे माल तुलसी गरे भाकरे भूषणामित विहारी ॥ यज्ञ उपवीत कलधौत को धौत कटि पीतपट कठिन अति कछनि दृढ़ पुरट द्युतिरोम लांगूल भारी।

गदावर वज्रधर वज्र नख वज्रतन नाद घन उग्रगति सुष्ठु मति जानकीसिंह सर्वार्तिहारी २। १२ विकट वि-कराल तन भाल शुचि बंक भृकुटी लसत तेज शतकोटि रवि नैन छविउग्र अति अमित न्यारी। देव करुणा-करे शील यश सागरे जै हरे पोसजन विघन हन रोस घन जोस तमचर प्रहारी॥ जयति हनुमान बलवान म-दमान हर लंकपति सिंधु अभिमान दर सुजन सनमा-न जन त्रानकारी। सर्वजित ग्याल चित पूर्ण वित देत मन आस नित दास के खासहित आदरे जानकी जय तिहारी ३। १३ जयति कपिराज रघुराज पदवंदि आ-नंद चित बोलि कपिराज प्रभु पाहि भजि साज सजि सुःखकारी। कीन दृढ़ सुहृदपन सप्त तारादि हन बालि भट यतन सो वधनकरि आपही सकल दुरतापहारी॥ जानकीनाथ रघुनाथ आज्ञा लही मुद्रिका हाथलै साथ लै भालु कपिदक्ष दिशि बाट धारी। लखत गिरि कंद-रा बाग वन सुन्दरा आकरा नदीनद साँकरा सिंधु तट आय मद सिंधु भारी ४। १४ लंघि लखि लंक गढ़ बंक भट लंकपति अगतिकरि शोधि सुधि बोधि जन-कात्मजा लंक निश्शंक जारी। धोय लाँगूल श्रम शूल सब खोय अनुकूल लखि जनकजा चिह्न लहि लंघि पुनि सिंधु भे सिंधु पारी॥ किलकिला शब्द सुनि कि-लकि अतिललकि कपि दल मिला झलकि पद प्रेम प्रभु गलकि फल फूल मधुवन उजारी। नाय पद माथ कपिनाथ रघुनाथ के गाथ कहि नाथ सो जानकी हाथ गहि होहु सकलार्तिहारी ५। १५ दीन चूड़ामणी राम

रुख पाय चतुरंगिणी भालु कपि साजि दल सेत सजि सिंधु सैना उतारी। लंक चहुँ फेरते घेरिदल दैत्य दरि जेर करि हेरि तिय लंकपति चेरि सम सर्वलंका बिदारी॥ गर्व लंकाधिपति सर्व सैनाधिपति खर्ब करि बाहुबल विदलि दल समर सुख सिंधु नीके निहारी। लषण लखि साँकरे मूरि गिरि आनि रक्षाकरे नौमि बलसागरे आदरे जानकी जय तिहारी ६। १६ सर्वजित यज्ञ दशकन्ध सुनि धाय पुनि जाय मद अन्ध ध्वनि ध्वंसिमख भालुकपिसैन शंकानिवारी। मरकटाधीशके भीर परभीर जहँ जहँ परी तूकरी त्राणतहँ जयति हनुमान बलबुद्धि भारी॥ काय मन वचन भलसाथ श्रीजानकीनाथ दिय जयति कपिनाथ निशि द्यौस जन जानकी त्राणकारी। लंकपति चूरि भो देव दुख दूरि भो पूरि यश भूरि सुख जयति श्रीराम जय जानकी जय तिहारी ७। १७ जयति जय अंजनी सूनु श्री वायु नंदन प्रभो शील गुण सिंधु जन बंधु सुखकंद आनंदकारी। देव दनुजादि मनुजादि मुनि संतजन सेव्य पद सुखद जन अहद बिरदावली विशद वद वेद चारी॥ सर्वसिद्ध्यादिपति विघ्नहर सिद्धिदा सिद्धिकरु कामना वृद्धि करु धर्म धन सर्वदानंद भारी। दास दुखदरण अघहरण सुख करण नित जानकी जयति हनुमान प्रभु त्राणदे मानजग जय तिहारी ८। १८ कौन अस देव जग दूसरो दानि सब खानि को सर्व सर्वोपरे देवतू दानि प्रणतार्तिहारी। स्वामि गुरु मित्रहित मातु पितु बंधु बित तू सही सर्वला सर्व विधि पालना नाथ करु तू हमारी॥ आसनहिं

आन यक आस प्रभु त्रान विश्वास प्रभु त्रास लहि कर्मगति दास तव जानकी छन्द नव अर्जधारी। विनय सुनि कान करु स्वच्छ विधि त्रान करु मान करु जयति हनुमान जन मान राखै तुही जय तिहारी ६। १९

(इतिहनुमानस्तुति)॥ अथ युगल पद—काफी तिताला॥ राम कृष्ण भजु बारंबार॥ नहिं दुबिधाको ठौर इहां है एक रूप इक रंग विचार १ परब्रह्म अवतार युगलधरि दुष्टन नष्टि हर्यो क्षितिभार॥ युगल चरित भव सिंधु सेतु दृढ़ चढ़ि जग लहत सदा भवपार २ इत अवधेश उतै ब्रजनायक ब्रज क्रीड़ा अरु अवध विहार॥ दास जानकी इष्ट देव दोउ दशरथ सुत अरु नंदकुमार ३। २० रामकृष्ण में भेद न और॥ चरित भेद युगअंतर लहियत कहियत सकल अमर शिरमौर १ परब्रह्म अवतार युगलधरि सुर हित हते निशाचर घोर॥ सुबस बसाय अमर प्रतिपाले सुयश विदित जगचारिहुओर २ एक रूप यक ज्योति जानि जिय दशरथ सुत अरु नंदकिशोर॥ ध्याय कमल पद युगल जानकी निशि दिन चहत कृपा दृगकोर ३। २१॥ कलांगड़ा तिताला॥ राम कृष्ण युग ध्यान धरीजै॥ श्याम कोटि अरबिंद मनोहर अतन कोटि छवि छीजै १ पीताम्बरधर धनुष बाण धर कीरति विमल लहीजै॥ लकुट मुकुट वरबेणु मधुर स्वर श्रवण सुधारस पीजै २ गोपी गोप सखासुरभी युत कृष्ण राधिका कीजै॥ उत हनुमन्त सन्त सुख दायक कपि भट भालु अनीजै ३ कोलभिल्ल गुह गिद्ध शेवरी कहँलागि विरद भनीजै॥ इत कुबिजा गज द्रु-

पद सुता यश उत मुनितिया तरीजै ४ युगल ध्यान यह रामकृष्ण को युगल चरित चितदीजै ॥ ध्यायगाय शिरनाय कमल पद बाँछित सफल करीजै ५ शील दया करुणा रस सागर दीनदयाल सहीजै ॥ शरणपाल शरणागत माँगत शरण शरण प्रभु लीजै ६ तारे पतित अनेक आजलौं पतित नेवाज सुनीजै ॥ तारहु अधम जानकी जनजो तौ प्रभु सही गनीजै ७ । २२ ॥ राग गारा एकताला ॥ छवि छटा कन्हाई तन मन नैनोंमें समाई ॥ वह छैल छबीली अजब रँगीली परम रसीली जू लोनाई १ देखत मन मोही छवि छकि जोही भई बिछोही हौं लजाई ॥ तन मन धनवारी भइ बलिहारी सरबस हारी सो कमाई २ कह करिये आली बिनु वनमाली चहुँदिशि खाली सी लखाई ॥ मैं पैयां परती दया जो करती यतन बिचरती तू बनाई ३ जेहि जोहे जीजै जग यश लीजै सो मोहिं दीजै री मिलाई ४ लखि जानकि दासा दरश पियासा अलि दै आसा त्यों सिधाई ॥ छल बल करि ल्याई मिले कन्हाई तिहुँपुर छाई सो भलाई ५ । २३ ॥ युगल पद—कलांगड़ा तिताला ॥ जयति सियावर जयति जानकी जगमग जगति ज्योति जयकारी ॥ सुंदर श्याम शरीर मनोहर गोरि किशोरि छटा छविन्यारी १ सजल जलद घन कोटि प्रभाधर तड़ित कोटि घन मध्य विहारी ॥ कोटि काम रमणीय रमापति समता रमा हेरि श्रुति हारी २ परब्रह्म परमेश परंछवि घटघट प्रगट जासु उजियारी ॥ आदि शक्ति परमेश्वरि देवी जननी जगत जगत करतारी ३ दम्पति ध्यान अनूपम

प्रभु को सदा सुमङ्गल दानि विचारी ॥ दृढ़ सुधारि उर धारि जानकी विधि करजोरि वन्दना धारी ४ । २४ ॥

हिंदुरागे तिताला ॥ श्रीरघुवीर शरीर छटा हुलसी हियमें नित देत हुलासैं ॥ श्याम सरोरुह कोटि बिकास घटा घन कोटि छबीली प्रभासैं १ छाइरही छबि तीनहुँ लोक दिगंतन अंत प्रकाश प्रकासैं ॥ त्यों तिहुँ लोकनि आ-तप पुंज प्रताप जगामग जक्क जगासैं २ देवनदास पवाँरहु को सुखदाय अदेवन वंश विनासैं ३ । २५ ॥

श्रीरघुवीर प्रताप प्रभा हुलसी शतकोटि प्रभाकरसी ॥ कीरति कोटि सुधाधरसी सरसी वसुधामें सुधा सरसी १ त्योंहि दयाल दयाकरकी दिगअंतनि लौंजु दयाबरसी ॥ दास पवाँरहु पै दरसी लह्यो प्रेम पदाम्बुज साररसी २ । २६ ॥

लोचन दुःख विमोचन चारु सरोजन ओज लही जगजासैं ॥ कोर कृपाते लखैं जेहिओर लहै सो सदा मन कामना भासैं १ त्यों भुजदंड प्रचंड बलीकर कंज शरासनबाण विलासैं ॥ दास पवाँर मनोगतिदानि नमामि सदा सुखदा सुखरासैं २ । २७ ॥

दानि शिरो-मणि देवनमें करुणानिधि रामकृपाल सही ॥ श्यामछ-बीली छटा छबिधामकी जोई हृदय बिचगोइरही १ कर्म समर्पि सबै करतारहि कर्म अकर्म कि फारुबही ॥ छ्वैन सकै परछाँह विषै जगपै रघुनाथ कृपाल चही २ पाय कृपा बल नाम प्रताप अनंत भवोदधि पारलही ॥ ध्याव पवाँर निरन्तर सो प्रभु प्रेम पदाम्बुज नेम गही ३ । २८

गाफिल नेक न हूजै विषै तजि राम रमा छबि जोइ रही ॥ जो कलिमें कल चाहिये तौ सजि ध्यान निरंतर

गोइ रही १ प्रेम पदाम्बुज बीज हदै क्षिति राम कृपा बलबोइ रही॥ मृत्यु सदा हम बिस्तर ज्यों संग सांवलि सांपिनि सोइरही २ सोउ रमापति दासन को करजोरि पदाम्बुज धोइ रही॥ नाम सुधारस सार पवाँर निरंतर जीह समोइ रही ३। २९॥ सिन्धुतिताला हरिगीतछंद—बारह मासा॥ चैत मम चित चेतुरे संसार भ्रम दरियावरे॥ कह जन्म व्यर्थ बितावरे करु सुजन संगति बावरे १ वैशाख तजि बैपार जग लहि संत संग प्रभावरे॥ सजि प्रेम प्रभुपद नावरे भवनिधि उतरि लहि ठाँवरे २ लहि जेठ जै चरितावली आषाढ़ अर्थहि पावरे॥ सावन सुहावन झूलना रघुवीर गुण गण गावरे ३ भादों सुनवधा भक्ति की साजिये विचारि उपावरे। आश्विन सजो प्रभु आरती मनवच सुभक्ति दृढ़ावरे ४ कार्त्तिक सुकीरति रामकी ता मध्य मन बिरमावरे। पुनि मार्ग-शिरमें मार्ग लहि प्रभुद्वार लगि चलि जावरे ५ जब पौषमें लहु शोष मनकी निकटवार्त्ति कहावरे॥ तबमाह में सियनाहको विनती विनीत सुनावरे ६ फागुन सुफगुवापायके श्रीराम जैति मनावरे॥ निशि दिन सदा गुण गावरे आनँद घन छबि छावरे ७ लहरी कृपा श्रीराम की आनँद निधि लहरावरे॥ अस्नान करु जब जान-की आवा औ गौन नशावरे ८। ३०॥ नौमि गुरु जे लखाय दियो नतो प्रेम प्रभू लहतो कहमें॥ चाहचुभी चित चोखि रही नित पै न लही कबहूं थहमें १ रोग में लोग ललात ज्यों भोग को यत्न सबै पै लहैं गृहमें॥ त्यागि विषै जिमि भोग सिखै अरु योग इषै लहिकै

वह में २ सज्जन संग छली बैपार में माल धनी ठगकी
रहमें ॥ हिम्मतवंत मुहिम्महि चाह लखें यदि उग्रहिये
सहमें ३ त्यों प्रभु ज्ञानकथा सुनिकै मन मेरो भ्रम्योभ्र-
मता दहमें ॥ थाह लही सियनाह कृपा फँस्यो प्रेमपदा-
म्बुज की चहमें ४ सोदृढ़ कीजै सुनीजै विनै गनिलीजै
सुदासनकी गहमें ॥ पाहि पवाँर गही प्रभु की सबभांति
पस्यो प्रभुकी पहमें ५। ३१ ॥ सिंधु तिताला ॥ जगत वि-
हार तेरो जग करतार तूही दूसरो न और भनै वेदहूं
बखानि कै ॥ आपनो न वश कछू सुवश तिहारे सबै की-
जिये निबाह राम आपनोहीं मानिकै १ तूहीपंचतत्त्वनि
को सानिकै बनायो पिंड तामें सबजीवन को बासदीन्हे
जानिकै ॥ शुभ औ अशुभ कर्म तिनते कराय तूही बां-
धिराखे जालदार पींजरे मो आनिकै २ खैंचि पट पीं-
जरो उबारो उर धारो दया नेक तौ निहारो ईश ईशता
की कानिकै । विरद सुबानि आनि सेवक प्रमानि जानि
पानि गहो जानकी विषै कुफंद भानिकै ३। ३२ सिया-
नाथहों अनाथपै सनाथ नाथ कीजिये ॥ भ्रमत फिरत भव
भ्रमर अहरनिश भ्रमता मिटाय राम धीरता धरीजि-
ये १ करम हमारो निरवारो ना विचारो ओर आपनी नि-
हारो ईश ईशता करीजिये ॥ गाथ लहे पाथ गहे साथ
ना सहाय कोऊ हाय रघुनाथ धाय हाथ गहि लीजिये २
काय मन वाचक हों याचक रमेश तेरो वाञ्छित देवैया
तूही तेरी आश जीजिये ॥ साँझ औ सकार रहों हा-
जिर तिहारे द्वार गायक विरद जानि अरज सुनीजिये ३
आपने शहरलागि डहर लखाय लाय हूजिये सहायपद

भक्तिप्रभु दीजिये॥ साहब सुजान जानकीश करुणा-
निधान दासता बिलोकि दास जानकी गनीजिये ४।३३
रागषट्ता० ३॥ सियानाथ हाथ गहि दीजिये बताय मोहिं
कौनसी डहर गहौं शवरे शहरकी॥ देवी और देवता
जुहारे औ बिचारे सबै पाई पैन प्यारे बाट घाटकी न
घरकी १ ज्ञानकी कहानी ज्ञानी ध्यानीहूं बतावैं ध्यान
योगी यती जप तप पूजा हरि हरकी॥ तौन तौ सकेन
करि प्रेम मग पग धरि आशगही कृपासिंधु कृपाकेल-
हरकी २ दूसरी न गति रघुपति पति मेरे दिनप्रति अव-
लम्ब तेरे पद कल्पतरकी॥ सुमति सुरति शुभ गतिके
दैवैया राम पाहि राम रघुकुल कञ्ज दिनकरकी ३ पाप
के जवाहिर बटोरि जोरि पूंजीकरी तौनहूं अमोलजानि
शवरे नजरकी॥ जानकी बुराई सबै बदलि भलाई देहु
हूजिये सहाई जू दुहाई सियावरकी ४।३४॥ अथ स्रग्धरा
छंद—झंझोटीता०३ राग॥ वन्दौं सर्वार्तिहारी कमलपद रमा-
नाथ आनंदकंदा॥ जाकी शरणागतीमें सकल सुखलहे
सर्वदाही अनंदा १ पाई आसा सुबासा सुमति शशि
प्रकासा चहूं अर्थवंदा॥ गर्जीअर्जी सुनावै सुनियचित
दये कोशलाधीश चन्दा २।३५॥ अथ पंचरत्नम्—त्रयोत
ताले सोरठरागे॥ जयराम ब्रह्म अकाम हे परमेश श्रीपति
माधवे॥ सबमें बसे सबते परे अतिगुप्त जाहिरराघवे १
तुमते दुनी बिस्तार है तेहिमें बिषै भ्रम जारवे॥ सब
जीवता वश ख्वार है प्रभु की कृपालहि पारवे १।२
जय जयति जय करुणा करे रघुनंद आनँद आगरे॥
रघुवीर धीररमावरे विनयं शृणोमि कृपा करे ३ प्रभुस-

वृंदा जन आदरे जै जैति दाया सागरे ॥ जन जानकी द्वारे अरे गहि बाहँ लीजै सादरे २।४।३६॥ दुमिला छंद तिताला कोव्याली डागरा रागे ॥ लहि कर्मज लाह निबाह नहीं अवगाह भवोदधि क्यों तरिये ॥ करजोरि निहोरि करोरि दफा बहु भायन पायन मों परिये १ सब भांति सहायक दीनन के प्रभु दीनदयाल दया करिये॥ नहिं और दुजी अवलम्ब दुनी दृढ़बांह कृपा करिये धरिये २ ३ लखि कर्मजहोति गलानि महा तेहि लाजन राजन हौं गरिये ॥ विधिअंक रजाय कलंक लगै कहिये रघु-राय कहा करिये ३ करता तुमहीं सब कारणके हमकौन तथापि शिरे धरिये ॥ सुनि अर्ज पवाँर कृपाकरिये धरि बांह भवोदधि सों तरिये ४।४ सरिये मन काम इतैं ढरिये दृग कोर कटाक्ष कृपा करिये ॥ अघ ओघ अधर्म सबै दरिये फरिये फरधर्म्म अभैभरिये ५ तरिये भवसिन्धु विषै हरिये दृढ़ भक्ति पदाब्ज हिये धरिये ॥ नहिं और दुजी अवलम्ब दुनी दृढ़ बांह कृपा करिये धरिये ६।५ ३७ (इतिपंचरत्नम्) ॥ अथ नवरत्नम्—बिहागराग ॥ दानि शिरोमणि सीताराम १ परे परेश परात्पर ईश्वर परं-धाम परणाम ॥ शील दया करुणा यशसागर सत-चित आनँद धाम २ दूजो देव दानि नाहिं दुनियां सब विधि पूरण काम ॥ देहु सदा मनकाम जानकी बसहु हृदय सब याम ३।३८ साहब लायक दास पवाँर १ परब्रह्म करतार जगतको सर्व सृष्टिअधार ॥ परमउदार दार दुख दारिद सियपति अवध भुवार २ कोमलचित्त दयाल दीनहित देत न लावत बार ॥ गज गणिकादि

ललित विरदावलि जाहिर जगत अपार ३ कहँ लगि कहौं गहौं पद पंकज हियरे करहु विहार ॥ जयति सियापति ईश जानकी बारबार बलिहार ४ । ३९ । २ अथ रागभैरव ॥ मेरे राम दूसरो करैया जग और को १ सर्व ईश सर्वकार तूही सबै ठौरको ॥ देहु दौरि दादद्याल कीजिये सुगौरको २ दीनबन्धु तोसों दूजो और बन्दी छोरको ॥ सबै भांति जानकी भरोसो कृपा कोरको ३ । ४० । ३ सुनो स्वामि सीताराम कीजिये निबेरो ॥ दीनता दयाल देखि दया दृष्टि हेरो १ बार ना अबार को विचार को न फेरो ॥ बार को उबार करो हरो कष्ट खेरो २ आस दास दूसरी न और देव चेरो ॥ जानकीश दासखास जानकी सुतेरो ३ । ४१ । ४ लगहु राम धाय आय दासकी गुहारा ॥ मोको अवलम्ब एक रावरी अधारा १ दासन को दास जानि जानकी पवाँरा ॥ जाहीभांति बनै राम कीजियेउबारा २ । ५ । ४२ सुनहुअरज वेगि धाय आय रामराजा ॥ बाना दीनबन्धु दीनबन्धुता विराजा १ कीजै सो नाम लाज आज दास काजा ॥ जो कछु चाहौं कृपाल सिद्ध करु सो साजा २ । ६ । ४३ ॥ रागपरज ॥ संकट हरण सकल सुखदायक साहब लायक मेरे ॥ कहँलागि कहौं करमगति करणी निशि दिन रहति सो घेरे १ नेक कृपादृग इति चितै प्रभु दुचिता हरहु सबेरे ॥ करहु सुचित चित दास जानकी शरण शरण प्रभु तेरे २ । ७ । ४४ सीताराम कृपाल कृपानिधि सियपति अवध विहारी ॥ दूजो ठौर न ठाकुरमेरे निज अवलम्ब तिहारी १ अधिक भयो ऋण उऋणकीजिये बाना वि-

रद सँभारी ॥ आरत हरण हरहु सब आरतकरु पवाँर सुखकारी २ । ८ । ४५ जयति सियापतिराम गोसाईं ॥ जो कछु करौं भरोसे तेरे सिद्धि करो सब ठाईं १ रामाष्टक वर विनै जानकी सुनि प्रभुहोहु सहाई ॥ दास पवाँर पाहि प्रभु तेरे कृपा करो रघुराई २ । ६ । ४६ (इतिनव रत्नम्) ॥ तितालासोहनी ॥ कहँलगि सुमिरौं कृपा तिहारी ॥ एक बुंद ते प्रगट पिंड करि करि सजीव सुखकारी १ मातु उदरधरि चक्र चक्रधर रक्षाकरी हमारी ॥ साजि सब अंग अहारहि दीन्हे आरत गर्भ निवारी २ जगत जन्म दै रोजी लाई धन्य जगतहितकारी ॥ तापर जगत विषै वशह्वै प्रभु प्रभुता नाथबिसारी ३ सेवा धर्म हमारी स्वामी सपन्यहु सो न विचारी ॥ खेल फेल में ह्वैपनबीते वृद्धा आनि जोहारी ४ जो कुछकियो अकारथ कीन्हो सबविधि बाजीहारी ॥ ऐसेहु पै जो करत पालना धन्य कृपा अधिकारी ५ पाहिपाहि शरणागत मांगत रक्षाकरो खरारी ॥ दास जानकी शरण लीजिये बाना विरद सँभारी ६ । ४७ सुर शिरताज अवधपति लायक सुनिये अरज हमारी ॥ यद्यपि अधम पातकी पाँवर तद्यपि आश तिहारी १ विना स्वार्थ परमारथदायक विनाहेत हितकारी ॥ दीनदयाल देव नहिं दूजो तुमहीं अवधविहारी २ पतित निवाज अधम उद्धारक पातक पुंज प्रहारी ॥ छाय रह्यो यश जगत रावरो जल थल गगन मँझारी ३ अजामील रयदास सदन से तिनके अघ न विचारी ॥ कोटिन अघी किये प्रभु पावन आज हमारी बारी ४ बाना विरद सोई प्रभु लीजै हूजे विरद सँभारी ॥ दास जान-

की पावन कीजै महापातकी भारी ५।४८ राग पट् तिताला ॥ सुर शिरताज मुकुटमणि रविकुल त्रिभुवन भूषण सांई ॥ विदित तिहूंपुर दीनबन्धुता छाय रही प्रभुताई १ कोल भिल्ल इत्यादि इतरजन तिनहूं दई बड़ाई ॥ दीनदयाल दीन दुखभंजन जानत प्रेम सगाई २ खोंटो खरो जाति नहिं बूझत शरणागत सुखदाई ॥ आरतहरण विदित प्रभु बाना दासन सदा सहाई ३ वेदहु भनत अमर यश गावत पै नहिं वरणि सिराई ॥ थके सहसफणि वरणत प्रभुता विरद महातमताई ४ किमि वरणै सो दास जानकी धन्य कृपा अधिकाई ॥ करहु कृपा प्रभु विरद आपनो सेवा लेहु लगाई ५ । ४९ ॥ तिताला नट मलारी रागे॥ दूजी आश न राखत जग में । एक आश विश्वास दास प्रभु भलो दास प्रभु पग में ॥ भलो बुरो सब भाँति तिहारो अरो रावरी मग में १ चलब कठिन पै चलो कृपा बल सुगम लहौं यदि अग में ॥ कृपा करो करधरो जानकी रहन देहु पग लग में २ । ५० ॥ तिताला जाजावंती रागे ॥ कृपासिन्धु जनबन्धु कृपाकर कृपा दृष्टि इत कीजै ॥ हौं अति दीन हीन सबही विधि प्रभु सों कहा कहीजै १ लखि लखि कर्म कुचालि आपनी निशिदिन ग्लानि गरीजै ॥ तुम साहब सर्वज्ञ हमारे तारे अमित अधीजै २ पतितनिवाज दीनहितकारी दीनदयाल सुनीजै ॥ विरद बड़ाई सुयश रावरो लहि कछु धीर धरीजै ३ बाना अधम उधारक प्रभु को सोइ आशा गहि जीजै ॥ और न ठाकुर ठौर हमारे सब विधि तुही गनीजै ४ बसत रावरे अहो रावरो खोंटो यदपि लहीजै ॥

आयों तदपि शरण मैं स्वामी शरण शरण प्रभु लीजै ५ सियानाह गहि बाँह नेह करि भक्ति पदाम्बुज दीजै ॥ अचल वास दै दास जानकी निशिदिन हृदय बसीजै ६ । ५१ ॥ कौवाली परज रागे ॥ मेरो कौन कसूर दूरि जो किये चरन सों ॥ हाज़िर रहे हजूर भूरि सुख लहो शरन सों १ प्रभु करता मैं कौन नहीं पर उड़ौं परन सों ॥ तूही सबै कराव दास कह सकै करन सों २ जहाँ चहो लै जाव कहा वश अवश डरन सों ॥ गरज हमारी राम महाभव सिन्धु तरन सों ३ हौं तौ चेरो खास आस प्रभु कृपा डरन सों ॥ लगो जानकी नेह नाह घनश्याम बरन सों ४ । ५२ ॥ तिताला मुलतानी रागे ॥ आरतहरण शरण प्रभु तेरी ॥ महापतितहू शरण जो आवै शरण गहत नहिं लागति देरी १ अजामील इत्यादि महाखल सुनि-यत रहे पाप की ढेरी ॥ टेरत नाम आपनो सुनि प्रभु दीन्ही मुक्ति काटि भवबेरी २ पातक आपनो कहा गनीजै सुनिये दया दृष्टि इत फेरी ॥ क्षणमहँ करत क्षार गिरि सों अघ मेरो तुलत न एक पसेरी ३ कृपा बाँट लै तुला दयाको तौलितररि दीजिये गेरी ॥ बदलि बहोरि प्रेम पद दीजै कीजै अनघ पाहि प्रभु केरी ४ शरण शरण शरणागत मांगत आरतवंत नाम प्रभु टेरी ॥ माफ़ करो तकसीर नाथ अब करो आपनो नहीं अनेरी ५ कहा जानकी कर न सकै कछु करतानाथ चूक कह मेरी ॥ त-दपि आपनी करणी मानत सेवा धर्म आपनो हेरी ६ । ५३ ॥ तिताला झंझोटी रागे ॥ जौपै चूक भई अनजाने ॥ जानि बूझिहूं किये स्वामि तौ विषयाधीन भुलाने १ काम क्रोध

मदलोभ विवश ह्वै जग जलूस लपटाने ॥ अधरम करत बीतिगे ह्वैपन अबलौं नहीं अघाने २ भूलिहु चरणक-मल नहिं सेये सेवा धरम न आने ॥ सबै भांति ते बाजी हारी कहा होत पछिताने ३ पातकहरण शरण प्रभु तेरी वेदहु विरद बखाने ॥ गहीशरण सो अबतो स्वामी अबलौं नहीं सिराने ४ क्षमाकरो उरधरो साहिबी अब नहिं बनत रिसाने । बिनामोलहीं दास जानकी प्रभुके हाथ बिकाने ५ । ५४ ॥ तिताला सोरठ रागे ॥ सबैभांतिभयो चेरो लागो नेह नातो मेरो साहब उदार राम अवधभु-वार सों १ जाही विधि चाहैं सोई अबतो निबाहैं नेह मेरे प्रभु नेहको सदाहीं रखवार सों ॥ खोंटो खरो जोई सोई मन वच नेह करि सेवैपद पार सो भवोदधिकेपार सों २ सेऊं पदपङ्कज सो आसरो भरोसो सोई जयति मनाऊं ध्याऊं सांझहूं सकार सों ॥ जानकीप्रसाद सोई राम रघुवंशमणि करैंगे पार बेड़ामेरो भवनिधिधारसों ३। ५५ आरतहरण प्रभु आरत शरणपाल आरत पवाँर जानि लागेहैं गुहारसों १ तबै करजोरि बहुभांतिन नि-होरि प्रभु कहे प्रभुपाहि दीजै भयेविरद सभारसों ॥ परशे सरोजपाणि बोले वरवैन तब हाज़िरी तिहारी लिखीगई सरकारसों २ सांझहू सकार जो न होगी दरकार तोहिं तौन तौ मिलैगी वस्तुमेरे दरबारसों ॥ ऐसो वरपाय पुनि पुनि परिपाय प्रभु पुनि विनयसुनाईदीनताप्रकार सों ३ रामविनयबाटिका लगाई प्रभु भेंटहेत लीजै सुनि लीजै कीजै परमविहार सों ॥ दीनके दयाल प्रभु दीनता विलो-कि ह्वै जानकी अरज्ञ सुनी कीन्ही अंगीकारसों ४।५६

तितालाझंझोटीरागे ॥ औढर ढरनि तिहारी बानि १ अ-
गम अपार चरित प्रभु तेरो को कहि सकै बखानि ॥
सुर मुनि शम्भुवाणि सहसानन वेदहु सके न जानि २
कन गिरि गिरि कन रंक भूपसम भूपति रंक समानि ॥
क्षणमहँ करत अपावन पावन पावन पतित निदानि ३
सदा सर्वदा प्रेमपियारे प्रेम अधिक हितमानि ॥ गज ग-
णिका खग भील यमन जे कछुकरही पहिंचानि ४ खोटो
खरो विचार न कीन्हे शरणलये गहिपानि ॥ अशरणश-
रण विदित प्रभु बाना करत सदा अघ हानि ५ करुणा-
सिंधु प्रणत प्रतिपालक पतितनेवाज प्रमानि ॥ शरण
गहे नित रहे जानकी आज सफल भे आनि ६ । ५७॥
तितालासोरठरागे ॥ मेरो मन भयो आनँद आज ॥ कछु निशि
अधिक अर्द्ध ते बीते करी कृपा रघुराज ॥ अद्भुत चरित
समुझि सुख उपजत धन्य गरीबनेवाज १ दरशन दये
कृतारथ कीन्हे लीला कृत बपु साज ॥ सो छवि छटा
जानकी दृग हिय निशि दिन रही विराज २ । ५८ ॥
तितालासिंधुरागे ॥ आजमिले मोहिं राति प्राणपति कटे ज-
गत के फंदा ॥ उये नाम रवि नशे विषै तम लहे भक्ति
मृदु कंदा १ मिटे विरह अरु सटे चोर चहुं काम आदि
मतिमंदा ॥ बजे अनंद बधाव चहूंदिशि भये महा आ-
नंदा २ धन्य दया प्रभु दीनबंधुता धन्य कृपा सतचंदा ॥
अभै बाहँ दिय दास जानकी धन्य सच्चिदानंद ३ । ५९
आज भयो आनंद महा मोहिं ॥ दरशन लहे गहे पद पं-
कज दृगन रही छविछटा श्याम पोहिं १ देखि कृपा रुख भयो
परमसुख धन्य कृपा अरु धन्यधन्य तोहिं ॥ अभय बास

दियदास जानकी किये खासजन कृपाकोरजोहिं २ । ६०
कहँलगि करों विनय मैं तेरी ॥ पतितराज शिरताज पात-
की रह्यो पापकीढेरी १ सो अपनाय कियो प्रभु आपन
खोंटोखरो न हेरी ॥ क्षणमहँ कियो जानकी पावन क्षणक
न लागी देरी २ गये पाप भवदाप मिटे सब जबते श-
रण लही प्रभुकेरी ॥ धन्य कृपा अरु धन्य साहिबी धन्य
भाग्य प्रभुमेरी ३ । ६१ ॥ यकतालामंझारागे ॥ महाराज राज
मों सुपास बड़ो दास को ॥ बसत निशंक शंक कछूयम
की न त्रास को १ सेवत पदारविंद सेवैं शंभु जासको ॥
पाहि गहे लहे सर्व सर्वदा हुलासको २ लोक परलोककहू
न राखे दूजी आसको ॥ जानकी भरोसो खास जानकी
निवासको ३ । ६२ सियानाथ नाथ तूहीतुही मोहिंभावतो ॥
सब दिन सब घरी प्रभुगुण गावतो १ सुधासिंधु न्हाय
अरविंद पद ध्यावतो ॥ जौन कछु दियो प्रभु दिनप्रति
पावतो २ व्यंजन सो साजि भोग रावरो लगावतो ॥ जूं-
ठन सोहाई सोई पेट भरि पावतो ३ मोदमयी शरणमें
बासर बितावतो ॥ राजा राव दूसरो कछू न लेखा लाव-
तो ४ सबैभांति भयो तेरो गहो ईशता प्रभावतो ॥ दी-
नबंधु दीनानाथ दुनीमें कहावतो ५ जानकीप्रसाद दीन
दीनता सुनावतो ॥ दीनबंधुता करीजे कीजे विरद सुहा-
वतो ६ । ६३ ॥ तिताला देश रागे ॥ मेरो राम स्वामियाँ बड़ोइ
देव नामियाँ ॥ ऐसो ना उदार सर्वदानियाँ दुनी में देव
जैसोमेरो रामदेवखगपति गामियाँ १ कोमल कृपालुचित
दीननदयाल हित सताचित आनँद सदाहीसुखधामियाँ ॥
शीलगुणसागर उजागर उदारचित दीनानाथ दीनबंधु

दानि मनोकामियाँ २ गुलामकी गुलामियाँ विलोकि द्रवैं स्वामियाँ न देखैं दासस्वामियाँ करैं कृपा अकामियाँ ॥ कञ्जकरधनुशर जानकी सुपक्षपर रक्षणा प्रमोदकर निशि दिनयामियाँ ३।६४ ॥ दंडक झपताला ॥ जयति सियराम सुखधाम आरामप्रद सर्वसर्वोपरे सर्वदानंदकारी ॥ कोशलाधीश भुजबीश दशशीश हर सर्वसुरईश जगदीशलीलावतारी १ ब्रह्म अव्यक्त अद्वैत निर्गुण निरञ्जन विभो विष्णु अजशम्भु त्रैरूपधारी॥भक्त ते त्यक्तपै भक्त कर्त्तार प्रभु भक्तआधार संसार पालन प्रहारी २ आर्त्तकै देव जब करत प्रभु आरती धरत अवतार तब होत दुर्त्तापहारी॥ हरत क्षितिभार संहरत खलमण्डली नौमि पदकञ्ज सो जानकी बारबारी ३। ६५ जयति रघुवीर जनपीर भव भीरहर धीर धर देव मुनिवृन्द आनन्ददाता ॥ शील गुणसिंधु जनबंधु करुणानिधे जयति श्रीराम सुखधाम संसारत्राता १ स्वामि गुरु मित्रहित सर्व विधि जानकी नाहसों नेह नाता ॥ नाथ सो मानि पहिंचानि जन आपनो बसिय हियधाम श्रीराम सौमित्रि भ्राता २। ६६ जय रघुनंदन सुर उर चन्दन दशरथनंदन नमोनमो। जनमन रञ्जन भवभय भञ्जन खलदल गञ्जन नमो नमो ॥ जय भरताग्रज जय विबुधाग्रज जय विश्वाग्रज नमोनमो। जय देवाग्रज जय सर्वाग्रज उर धरि पदरज नमोनमो १।६७ जय सत्यङ्कर जय सत्यंचर जय सत्यंभर नमोनमो। जय विश्वङ्कर जय विश्वम्भर जय विश्वंहर नमोनमो ॥ जय परमेश्वर जय देवेश्वर जय सर्वेश्वर नमोनमो । जय रसकेश्वर जय जगदेश्वर जयति

रमेश्वर नमोनमो २। ६८ जय धर्माश्रय जय वेदाश्रय जय विश्वाश्रय नमोनमो। जय ज्ञानाश्रय जय ध्याना-श्रय जय योगाश्रय नमोनमो॥ जय कमलाश्रय जयकर्मा-श्रय जय भक्ताश्रय नमोनमो। जय ब्रह्माश्रय जयरुद्रा-श्रय जय मायाश्रय नमोनमो ३। ६९ जय जीवाश्रय जय मुक्ताश्रय जयवर्म्माश्रय नमो नमो। जयप्रेमाश्रय जयनेमाश्रय जय सर्वाश्रय नमोनमो॥ जय अर्थास्पद जय धर्म्मास्पद जय मोक्षास्पद नमोनमो। जय ज्ञाना-स्पद जय ध्यानास्पद जय प्रेमास्पद नमोनमो ४। ७० जयरूपास्पद जयशोभास्पद जयभोगास्पद नमोनमो। जय योगास्पद आनंदास्पद जयसर्वास्पद नमोनमो॥ जय भवध्यापक जय जनजापक जय जगथापक नमो नमो। जयकृततारक जगविस्तारक धनुशरधारक नमो नमो ५। ७१ जय जनपालक दीनदयालक खलदल शालक नमोनमो। जयदुरितांतक जयकालान्तक जय नरकान्तक नमोनमो॥ जयशुभकारक जय प्रणधारक जयभवतारक नमोनमो। जयनिस्तारक अधमउधारक खल संहारक नमोनमो ६। ७२ जय जगनायक जग-त विनायक जन सुखदायक नमोनमो। साहब लायक दाससहायक श्रीरघुनायक नमोनमो॥ जयरूपामृत जय नामामृत जय लीलामृत नमोनमो। जय सगुणामृत जय चरितामृत जय करुणामृत नमोनमो ७। ७३ जय सत्याकर जयधर्माकर जगत प्रभाकर नमोनमो। जय करुणाकर दीनदयाकर जयातिकृताकर नमोनमो॥ जय शोभाधर जय शोभाकर जयशोभापर नमोनमो। जय

दीनोद्धर जय धर्मोद्धर जय वेदोद्धर नमोनमो ८। ७४
जय सुरमंडन असुर बिहंडन खलदलखंडन नमोनमो।
जय रसधारण जय रसकारण अधमउधारण नमोनमो॥
जय रसवर्षण जय संकर्षण वसुधाहर्षण नमोनमो।
जय रसपावन जय रसभावन रावनद्रावन नमोनमो ९
७५ जय रससागर जय रसनागर सर्व्वगुणागर नमो
नमो। धर्म्म धुरंधर चतुर्द्धनुर्द्धर पीताम्बरधर नमोनमो॥
जय नारायण परम परायण जय रामायण नमोनमो।
जय भद्रायन जय करुणायन जयसर्वायन नमोनमो १०
७६ जयसुरभूषण सुरपतिभूषण जयभवभूषण नमोनमो।
जयजनभूषण सदाअदूषण रघुकुलभूषण नमोनमो॥
जयसुररञ्जन सुरदृगअञ्जन भवभयभञ्जन नमोनमो। ज-
नरिपुगञ्जन कलुषविभञ्जन प्रभुपदकञ्जन नमोनमो ११
७७ जयजगरक्षक जगतप्रत्यक्षक दानवभक्षक नमोनमो॥
जय कमलाक्षक सतजनाशिक्षक सुजनसुपक्षक नमोन-
मो॥ जयजनतास्थित जय धर्म्मास्थित जयहृदयास्थित
नमोनमो। जयज्ञानास्थित जयध्यानास्थित जंयसर्वा-
स्थितनमोनमो १२। ७८ जय तनुनिर्गुण जय गुणनि-
र्गुण जय कृतनिर्गुण नमोनमो। कलातिहारी अगमअ-
पारी सगुण निर्गुण नमोनमो॥ जब कै आरत देवपुकारत
तब तनु धारत नमोनमो। बिरद सँभारत काजसवाँरत
यश विस्तारत नमोनमो १३। ७९ जयति कृपाला दीन-
दयाला करु प्रतिपाला नमोनमो। हरु जगत कशाला
जगभ्रमजाला दशरथलाला नमोनमो॥ दायाउरधारो
बिरद सँभारो इतै निहारो नमोनमो। सबभांति तिहारो

हौं तो बारो अधम उधारो नमोनमो १४ । ८० जयजय करतारा रहितविकारा जय श्रुतिसारा नमोनमो । मम तुही अधारा और न चारा बारम्बारा नमोनमो ॥ भव-निधि विस्तारा अगम अपारा कीजै पारा नमोनमो । जय अवधभुवारा हृदय पवाँरा करौविहारा नमोनमो १५ ८१ ॥ सोरठपस्तोताले ॥ साकेत रत्ननिकेत सुन्दर रत्नमय सिंहासने ॥ षोड़शकला मणिकर्णिका किंजल्क दल तामें बने १ मणि छत्र चामर ढुरत लुरकत मुक्तमाला अन-गने ॥ तामध्य राजत राम सीता पार्श्व देव महाजने २ सेवैं पदाम्बुज सर्वसुर ऋषिराजमणि मुनिवर घने ॥ सोऽहं जानकीपति मधुर मूरति जानकी जीवन धने ३ । ८२ ध्याऊं मनोहर श्याम सुन्दर सजल घन छविधामहूं ॥ मणि मुकुट शीश किरीट कुण्डल ललित मुक्ता दामहूं १ भृगुलता कौस्तुभ वक्षथल श्रीदामहूं अभिरामहूं ॥ जन जानकी हियधाममें श्रीराम अष्टहु यामहूं २ । ८३ ॥ रागबिहागतिताला ॥ अग जग व्यापक राम हमारा ॥ जहँ देखो तहँ जगत ज्योति प्रभु घटघट किये पसारा १ जल थल गगन भूमि दश दिशिहूं विरद चन्द्र उजियारा ॥ देखिछटा छविदास जानकी बारबार बलिहारा २ । ८४ ॥ तितालासोहनीरागे ॥ जयति राम रघुवंश रमापति रमारमण रघुवीरा ॥ रमानाथ रघुनाथ रघूत्तम रणरंगी रणधीरा १ रघुकुल शीश विभूषण रघुकुल कुमुद पूर्णिमाचन्दा ॥ रघुकुलकमल दिवाकर भाकर नौमि सच्चिदानन्दा २ म-हाराज रघुराज राजमणि रक्त पदाम्बुज ध्यावै ॥ सदा जानकीनाथ जानकी जयजयकार मनावै ३ । ८५ महाराज

राजेन्द्र रमापति राजस कञ्चुक सुहावै॥ राजधर्म्म प्रिय राजकर्म्मरत राजनीति चित चावै १ राजभोग रुचि राज्यभोगदा राजसमाज सुहावै॥ रतनमाल रत्नाकर भूषण रघुकुलरतनहिं ध्यावै २ रक्तपाणि रक्तारुण लोचन रक्तवसन जेहिभावै॥ निशिदिन सदा जानकी ताको जयजयकार मनावै ३।८६ जयरकार करतार जगत जग जयमकार करतारी॥ सर्व्वसार संसार सृजकसो नमस्कार शतबारी १ निराकार निर्भेद निराभव निराधार क्षितिधारी॥ निरायाससुखरास निरामय घटघट विघट विहारी २ मच्छ कच्छ शूकर नरहरि वामन परशुरामश्रुतिधारी॥ रामकृष्ण अरु बौद्ध कलंकी दशधा कला तिहारी ३ सर्वदेवमय राम अवधपति दूजोनहीं निहारी॥ दासजानकी देखि साहिबी बार बार बलिहारी ४।८७ साँझ सकार वन्दना करहूं युगल चरण जलजाता॥ जयति रकार मकार अवधपति मेरे ईश विधाता १ जयरकार जयकार सर्व्वगुरु सतजन आनँददाता॥ सुर नर मुनि गो भूमि त्राणदा दुष्टदलन विख्याता २ माया हास्य विलास जासुकी जयरकार पितुमाता॥ रारमेश मा मातु जानकी दास जानकी त्राता ३।८८ परेज्योतिपरमेशि परेभव जगतजननि श्रुति शाखा १ जयरकार जय जनकनन्दनी प्रेमविवश करिराखा॥ नमस्कार जेहि रमा पियारी तारी जे तिय पाखा २ रमाविहार मुदित निशि वासर रमाहास्य रसचाखा॥ सोईजानकी जयति मनावत मति अनुसार सुभाखा ३।८९ रमाप्रचारी बोधन कारी जय जय राम तिहारी॥ रमा पियारे रमे आतमा

भाग्य विवर्द्धनकारी १ रमा ज्ञान रत रमा दयाकर मानद रमा विहारी ॥ रमाचरित लखि आनँदकारी सेवा सदा सुखारी २ रमा प्रीति परतीति निबाहक रमातत्त्व अधिकारी ॥ रमासहित श्रीराम तिहारे दास जानकी वारी ३ । ६० ॥ तितालाजाजावंतीरागे ॥ जे चौबिस रूपा धरे अनूपा प्रणवौंतिन्हें निहोरी ॥ जय त्रिभुवन भूपा श्याम स्वरूपा नमस्कार शतकोरी १ जयजय जग जननी जग विस्तरनी जयजय जनककिशोरी ॥ दम्पति श्रीचरणा अशरण शरणा वन्दौं हौं करजोरी २ । ९१ ॥ पुनः ॥ ब्रह्म तत्त्व के जाननिहारे जय सनकादि[1] मुनीशा । ब्रह्मपुत्र प्रभुअंश नमस्ते चरणकमल धरि शीशा ॥ दूजो शूकर[2] धरणि उबारे मारे हाटक नैना । यज्ञपुरुष[3] ह्वै यज्ञकराये बली भई सुरसैना १ हयग्रीव[4] मधुदैत्यप्रहारे हारे पृथ्वी भारा । जाहिर नाम भयो मधुसूदन नमस्कार शतबारा ॥ नारायण[5] तपपुञ्ज प्रगटभे दुहिता धर्म विवाही । करत तपस्या बद्रीआश्रम भलीबात निर्बाही २ जयति कपिल[6] मुनि सांख्य प्रकाशे ज्ञान योग अधिकारा । देवहुती मातहि सिख दीन्हे कीन्हे भवनिधि पारा ॥ दत्तात्रय[7] यदुकूप उबारे किये ज्ञान उपचारा । विंशति चारि गुरू उपदेशनि भवनिधिसेतु सुधारा ३ अष्टम[8] ऋषभ ऋषीश जैनमत जैन धर्म पथधारा । सोऊ कछु दुर्भाव न आनिय इच्छा अवध भुवारा ॥ पृथु[9] भूपति प्रभुअंशतिहारो तातें नमतपवाँरा । दुही धरणि रस भूरि सचारे वेणहु भवाधि उतारा ४ सम करि भूमि सुवश करि जग जन हाट बाट विस्तारा । दान पुण्य यज्ञादि कर्मकृत सबविधि धर्मसु-

धारा॥ सत्यव्रत हित मत्स्य[10] रूपधरि कीन्ह्यो प्रलय प-
सारा। कच्छ[11] रूपधरि मथ्यो जलधि प्रभु चौदह रतन
निकारा ५ धन्वन्तरि[12] रुज हरे जगतके अरुज भयोसं-
सारा। पुनि प्रभुधरी मोहनीमूरति[13] मोहे असुर अपारा॥
सुरा असुर अमरन दै अमृत दुहुँ दल झगर निवारा।
नरहरि[14] ह्वै प्रहलाद उबारे हिरणकशिपु संहारा ६ वाम-
न[15] ह्वै बलि छल्यो रमापति सुरपति हेतु विचारा। हंस[16]
हेतु सनकादिकधारे दयेज्ञान अधिकारा॥ नारायण[17] ध्रुव
हेतु किये ध्रुव सुयश विदित संसारा। हरि[18] गजहेतु ग्राह
गतिपाई जयजय अवधभुवारा ७ परशुराम[19] ह्वै परशा
धारे क्षत्रिन किये सँहारा। अमित रूप अवतार धारिप्रभु
विचरत जग फुलवारा॥ जैसो जबै समै हित देखो तैसो
करो विहारा। धन्य रमापति धन्य साहिबी साहबदास प-
वाँरा ८। ६२॥ जाजावंती॥ जयति सियापति[20] जीवन प्यारे
दशरथराजदुलारे॥ दूजो नहिंकोई सबजगजोई जल थल
सकल विचारे १ अपरम्पारे चरित तिहारे लीलाललित
अपारे॥ परे परेश परात्पर तूही घटघट तुही निहारे २ देव
पुकारे आरतधारे प्रभु दरबार जुहारे॥ दायाधारे विंशति
वारे अवधपुरी पगुधारे ३ विरद सँभारे रावणमारे पृथ्वी
भार उतारे॥ बारम्बारे शरण तिहारे पाहिमुरारे पाहिमु-
रारे ४ आरतढारे आशाधारे हाजिर प्रभुके द्वारे॥ दाया-
धारे दास विचारे कृपा कटाक्ष निहारे ५ धन्य खरारे श-
रण हँकारे सब विधि काज सँवारे॥ जगत विहारे सिर-
जनहारे जन पवाँर हितकारे ६। ६३॥ पुनः॥ जयति
व्यास[21] शास्त्रादि प्रकाशक भगवत चरित बखाना॥ राम

अंश अवतंश कृपाकर कीजै कृपा सुजाना १ जयति कृष्ण[22] बैकुंठ निवासी जगत हितू जग त्राना ॥ देवन हित कंसादि प्रहारे जयजय कृपानिधाना। २ बौद्ध[23] बोधि जग यज्ञ बिबर्जे पन्थ सरावग ठाना ॥ अनुचित उचित विचार न कीन्हे प्रभु अनुशासन माना। ३ इच्छाचारी सदा रमापति हरिइच्छा बलवाना ॥ सब विधि जगत भलोई चाहत जय जय कृपानिधाना ४ कलिके अंत कलंकी[24] ह्वैहैं स्वैहैं अधरम गेती ॥ सतयुग धर्म पसार करैंगे दलि दलि कुजन कुनेती ५ बीस चारि ये कला रमापति सबै जगतके हेती ॥ जयति कलाधर अहं नमामी निशि दिन सिया समेती ६। ६४॥ अथ सहस्रनाम जाजावंती रागे ॥ श्रीनिकेत श्रीमान स्वस्तिदा स्वस्ति दक्षिणहि ध्याऊं। स्वस्ति स्वस्ति कृत अस्थिर अस्मृत स्वस्ति भृतहि बलिजाऊं ॥ श्रीनिवास श्रीवास अजित अज श्रीकर अजित अदूषण। श्री भावन श्रीबत्स अमर प्रभु श्रीधर अग्रज अभूषण १। ६५ श्रीशः श्रीदः अंघ्रि अनावृत आनँद श्रीनिधि अन्ता। श्रीपति आदि अनादि अतिप्रिय अव्यय अनघ अनन्ता ॥ अरिसूदन श्रीगर्भ अभय कृत अनुर्बीण अधु यक्षा॥ अहं आतमा आस्तिक औषध अग्रणीय शिव दक्षा २। ९६ अधरअवर्त्तन आदित अर्यम अप्रमेय असुरारी। अदृश अशिष्ट अवृत अस्तारन आत्मयोनि अघहारी॥ अच्युत अनुज अमूर्ति अर्कतम अग्रज अतिग अमाना। आत्मवान अग्रह अस्थानुः आतम भू भगवाना ३। ६७ श्रीमत अंबर अर्थ अनर्था अनिर्बीण अष्टाक्षर। असंख्येय अतुष्ट

अनात्मा अनुभेक्षण अस्तावर ॥ अग्निगर्भ अस्कंध अ-
नुत्तम आनँद ज्योति महीधर। अनंतात्म अंबोनिधि अं-
तक आत्म स्तोत्र सुविक्षर ४।९८ अकृत अगम अस्तव
प्रिय अस्तुति असनाशृङ्गि अशोका। आम्र अभूय अ-
मर्षि अनिर्दिशि अस्तविष्ट परलोका ॥ जय अमोघ अ-
स्वस्त अस्तबिर अधृत अनेक स्वरूपा। अर्चिमान
आपन्निधि अर्चित अरविंदाक्ष अरूपा ५। ९९ आश्र
अधार अभेद अनत प्रिय अधिष्ठात्म अरकंदा। व्यक्ता
व्यक्त अजानुबाहु अज अपराजित व्रजचंदा॥ अष्टविष्ट
अस्तव्यच आमृति अनुब्र्हत् अनिरुद्धा। जय अ-
कार राकार नमामी निशिवासर सिय सुद्धा ६।१००
इहावीर ईशान ईशजः ईश्वर ईश्व उदारा। उग्र उदीर्ण
उपेन्द्रच उद्भव एकाकी श्रुति सारा ॥ इन्द्रकर्म इन्द्रे-
श उदारधि ऊर्ध्वरेत ऊबासा। ऊर्ध्वकेशि उत्तर उत्ता-
रन ऊर्ध्वंग उत्तम आसा ७। १ एकपात केशवकृत
लक्षण कपिलाचार्य्य कृपाला। कोशलेन्द्र कोशलप-
ति कामी करुणासिंधु दयाला ॥ केतमान कपिलध्वज
कृच्छ्रम कालनेमि कृतकारण। कृष्ण कपीश्वर कथित
काम क्रम करण अधम उद्धारण ८। २ कमलापति कुन
कूल कमलधर कमल नाभि कंसारी। कृपासिंधु कृतसूत्र
कर्म हत कृतस्थूल कामारी॥ कनकाङ्गद कृतकर्म कृता-
गम ककुद्धाम कुबरीशा। केशीमर्दन कंसनिकन्दन कंबु-
केशि जगदीशा ९।३ कुमुद कुंभ कंबलधर कृच्छ्रिव क-
पिल कुंडली काला। कामदेव कृच्छुक कमलाक्षक कीर्ति-
मान क्षितिपाला ॥ कामपाल कान्तार कवीश्वर कीर्त्तन

कुंदर स्वामी। जयति कपीन्द्र केशरी कपिपति वारंवार
नमामी १०।४ जय कृतज्ञ खंईश खरारी चण्ड परशु
गौरीशा। ज्ञानगम्य गोविन्द गवांपति ग्राहनाथ गजई-
शा॥ गोबर्द्धन गोपाल गोपिप्रिय गोप्रिय गोपीकन्ता।
गुणमहात गुणभिन्न गुरोःगुरु गंभीरात्म अनन्ता ११।५
गुप्त गँभीर गदा गरुड़ध्वज गोप्तागहन गणेशा।ज्ञानो-
त्तमगति सत्यगदाधर गोहित गुह्य सुरेशा॥ तंनमामि
घनश्याम नरोत्तम नर नारायण नेमा। नारायणनरसिंह
निरंजन नहुषनन्द की क्षेमा १२।६ नैकरूप निःखेद नि-
अन्ता निलयधार निर्वाना। नेस्तथ नेय नक्षत्रच नेमी
नन्दननंद महाना॥ निर्वितात्म नैकात्म नयतनै निग्रह
निर्गुण अभेशा। निरंकार नर्योनि निलयनृप निध नब्य-
य परमेशा १३।७ चतुर्वेद चिन्तामणि चाहक चतुर्भाव
देवेशा। चतुर्व्यूह चतुरात्म चतुर्भुज चतुर्दंष्ट्र चक्रेशा॥
चतुःश्रृङ्ग चैतन्य चक्रधर चतुर्मूर्त्ति आनन्दा। चक्री
चक्र अचल चल चातुर जय चांडूर सुछंःदा १४।८
छत्री छेम छमा छविसागर छिन्नशोक छितिपाला। छपा-
नाथ छेत्रज्ञ छत्रधर छन्दरूप निःकाला॥ जोग जज्ञ-
जित क्रोध जनेश्वर जुगावर्त्त जदु श्रेष्ठा। जम जगतात्म
जितात्म जितेन्द्रिय जेत्ताजगद्विज जेष्ठा १५।९ ज्योति-
र्भानु जुगादिक कर्त्ता जगन्नाथ जोगीशा। जज्ञानी कृत
जज्ञसाधन। जय जज्ञी जगदीशा॥ जदुपति जनन जयन्त
जीवजः जज्ञकृता जगभोगी। जगज्ज्योति जन्मादि जग-
द्गुरु जज्ञारूढ़ सुजोगी १६।१० जगतहेतु जगसेतु
जनार्दन जगपति जगत जनेशा। जन बन्धूजन जनक

जगतहित जानकीश जीवेशा॥जितामित्र जित क्रोध ज-
गद्भृत जदुकुल कमल दिनेशा। जदुभूषण जदुनाथ जश-
स्वी जज्ञपुरुष जज्ञेशा १७। ११ भूमंडि चरित भ्रमकि
भुमि भेलत जगत निकेत सवाँरे। श्री टीकम रणछोर
ठहरदा ठाकुरठीक हमारे॥ डीगम्बर बरडहर बतैया ढ-
क्काधरहितकारे। तमहारी तमचरण विदारक देवउधारन
हारे १८। १२ त्रिलोकेश तम तेज त्रिविक्रम तेजाश्रय
तपधारी। तीर्थरूप त्रैलोक्य आतमा जै त्रिसाम त्रिस-
रारी॥ थिरथापक थिरताके नायक थिरता दायक दासा।
दुर्द्धर क्षितिधर दामिनि रूपा दासोद्धर जनत्रासा १९।
१३ दयासिन्धु दैत्यारि दयालक दीप्तिमूर्त्ति दमदेवा।
दर्पद दर्पहारि दण्डैता दारुणदक्ष अभेवा॥ दृढ़दोमान
दक्षणा दुखदर दामोदर दासारा। दयाधाम देवेश दिव-
स्पृक द्रविणादीन हितकारा २०। १४ धर्म्म धर्म्मकृत
धर्म्मधुरन्धर धर्म्मगुप्त धर्म्माधर। धानि धनञ्जय धनुर्वेद
जय धनुधर धर्मि धराधर॥ धाता धूधर्मज्ञ धरापति ध-
र्माध्यक्ष धनेशा। धर्म्मसेतु धार्म्मिक धनदायक निधन
धनी धर्म्मेशा २१। १५ प्रसन्नात्म प्रत्येय प्रजापति प्रा-
णद प्राणप्रकासा। पतिसाक्षी पूरैत पुरन्दर परमानन्द
प्रसासा॥ पुष्पराक्ष प्रतिरथ पारायण पुण्यश्रवपरजन्या।
प्राग्वंश प्रियकीर्ति प्रजाभव पेशल पातकहन्या २२। १६
पितुर्यज्ञ प्रपिता प्राणालय प्रजवस्थित प्राणेशा। प्राण
जीवनाध्यक्ष पुरोत्तम प्रदन पवित्र परेशा॥ प्रकृतवर्मि
परमेष्ठि प्रणव प्रद प्रभव प्रमान पुरातन। पुरुषोत्तम
पुरुषेश पितामह पुरजित पूरणशासन २३। १७ परशुराम

प्रिय रहह प्राणधृत जयप्रजाग्र परनामा । पद्मीपद्म प्रति-
ष्ठित पावन प्रीति विवर्द्धन नामा ॥ पवनामल पथिपुण्य
पुनर्वसु परम पराध प्रवीना । परेयात्म परमेश प्रतापी
पद्मनाभ श्रीमीना २४ । १८ पुरुष प्रथिक प्रद्युम्न परा-
क्रम जय प्रमत्त परधाना । पूतात्मा परपरे प्रमर्द्दन पुष्ट
प्रमोद निधाना ॥ फुरफरदाय सहायक फाल्गुन फगुवा
जगतबिहारी । बिश्वरेत बिक्रम बिद्युत्तम बृहद्रूप बि-
स्तारी २५ । १९ बिश्वयोनि बाराह बृषाकृत्त बेद ब्यंग
बिश्वेशा । बासुदेव बसु बेद बिजयबिद बामन बपु बृष-
केशा ॥ बिश्वभोगि बीरात्म बृषाही बृषापर्व बैषाना । बे-
गवान बृद्धात्म बिरोचन बिषम ब्याग्रबिद्वाना २६ । २०
बीर बिदेश बरांगबसुप्प्रद बासुपाद बागीशा । बारुण
बरुण बेध बनमाली बचसापति बरुनीशा ॥ बीरबाहु
बृषकर्म्म बिदारण बीजमब्य बिज्ञाता । बाग्मी बसुध बि-
बिक्र बिकोदर बत्सी बिनय बिधाता २७ । २१ बिश्वोधन
ब्रह्मण्य बृषाप्रिय बृषाभक्ष बिजितात्मा । बषट्कार बिभु
बंश बिबर्द्धन बीर्य्यमान बिधितात्मा ॥ बिदेकात्म बिद्वा-
व बृषाकपि बिश्वरूप बिश्वात्मा । बिल्कबि बैद्य बिधात्र
ब्रह्मणी बृहद्भानु सर्बात्मा २८ । २२ ॥ तिताला डागरा रागे ॥
बरद बशिष्ठ बिष्णु बिश्ववा बिशाल अक्ष ब्यास बीर्य्य
ब्यापक बिरोध बिश्वराम ये । बिष्टरस्त्रवो बिकर्त्त बर्द्ध-
मान बृक्ष बिरुबायु ब्राह्मण प्रिये बिशुद्ध श्री बिरामये ॥
बिश्व दक्षिणा बिशोक बसुर बृषभबाल बेदसाक्षि बिश्व
भर्त्त बेद अंग नामये । बिबस्थान बसुमन ब्याल बैकुंठ
पति ब्यापिबिक्रमूर्जित नमामि अष्टयामये २९ । २३

भारभृत भीम भक्तबत्सल भयापहारि भूःभीम बिक्रमभु-
जंगनाथ गानिये। भूत भृद्भवत्प्रभोभुवः भवेश भव्यभूत
भृगुभूति भेषज औ भूतधर्म्म जानिये॥ भृत्तभोक्त भगा
नन्द भूरि दक्षिणा भुगर्भ भयमन्युभुक्त भूतभावन प्र-
मानिये। भूतआत्म भूतकार भोजन औ भूतपति धन्य
भगवान भर्त्त भावन बखानिये ३०। २४ महाराज म-
हाभूत महाकर्म्म महातेज महामूर्त्ति महायज्ञ महागर्भ
महावीर।महावायु महाब्यंग महाकोश महाभोग महायो-
गमहादेव महाबुद्धि महाधीर॥ महाबीर्य्य महाशक्तिमहा
तंत्र महा यंत्र महामंत्र सीताराम श्यामअंग पीतचीर।
महाभर्त्त महिष्वास दासन हुलासदानि रामरघुवीर दूरि
कीजिये शरीर पीर ३१। २५ महानिधि महासिधि महा
ऋधि महोदधि महामायामहाकर्मि मिताशन महातन।
महादत्त महाकृत्त महाधृक महाहवि महाहदि महायज
मनोजव महाशन॥ महामख महाबल महायक्ष महास्व-
च्छ महाभग मेघाम्बर महामनु महाजन। मानदमहाक्ष
मार्ग माधवे मुकुन्दमधु मंगल महर जानकीप्रसाद महा
धन ३२। २६॥ तिताला लाजावंती रागे॥ महतासुर महीन्द्र
मधुसूदन मेदिनिपति भगवन्ता। मेधावीमर्याद महेश्वर
मितिबिक्रम बलवन्ता॥ जय मच्छर मृत्युप मुरलीधर
जय मरीचि मुक्तात्मा। जय महर्षि जय हर्षदेवैया जय
जय जय माहात्मा ३३। २७ लोकाध्यक्ष ललाम लोक-
पति लोकनाथ लोकेशा। लक्ष्मीपति जयलोक लक्षिमी
लक्ष्मी प्रिय अवधेशा॥ लक्ष्मी लोकपाल लोकेश्वर लो-
कबन्धु श्रीशेशा। लक्ष्मीबाम जयति लक्ष्मीप्रद जे जा-

नकी जनेशा ३४ । २८ श्रेय श्रियामल स्रांति सर्वदिक् संकर्षण सुरनामी । शांतशांतिदा श्रेष्ठ सुधन्वा स्वच्छ सुतानँद स्वामी ॥ संवत्सर शत्रुघ्न सुदर्शन सर्वचक्षु सुख धामी । सत्याधर्म्म सुखेश सतांगति बारम्बार नमामी ३५ । २९ सर्वदर्शी सर्वज्ञ सुमुख शुचि सूक्ष्म समीहन नामा । सामस्वांग सुब्रत सत्कीरति सुखद सुहृद सुख धामा ॥ स्वात्मा सुबससदाक्षर सोमप सत्यसिन्धु शुभ सामा । सर्वयोग साक्षीसत्यस्थी बारबार परणामा ३६ । ३० सत्यधर्म्म सविता संवर्त्तक सहस्राक्ष श्यामंगा । सुद्धवसिद्धि सुरेश्वरसत्यक सत्यमान अघभंगा ॥ सत्याधर शशिबिन्दु सत्य बल सत्य रूप सियसंगा । स्वयंजात सर्वाधि सत्यसम सम्भव धृत शारंगा ३७ । ३१ सदामर्ष शब्दादिक सर्वस सर्वसाह सुरईशा । सर्वप्रहायुध सिद्धि समात्या समिता जै जगदीशा ॥ शिशिर सुरेशा सर्मसमित्यंजय सत्यामेध दयाला । समावर्त्त शिव शूर शतानन संनिवास सुरपाला ३८ । ३२ सहस्रांशु सत्वंपति संग्रह सुरुचि सूर्य्य बलिहारी । सनत सनातन सत्याचारज सर्वासर्व बिहारी ॥ सम्बर अम्बर सर्वदर्शने शृङ्गी असुर प्रहारी । शोकहरण श्रीसामगायने शक्ति सहित सुखकारी ३९ । ३३ सुबरण बिन्द सुमृत बपुसात्यक सहस्रार्चि सतधामा । सप्तायुध शुचिरार्घ्य सर्वदिक् सुहृद पियारे रामा ॥ सुजन सुधीसंह्रात सिद्धिदा शत्रुताप हितपाला । सत्यमान श्री सर्वकामदा सुहृद सुपर्ण बिशाला ४० । ३४ ॥ तिताला डागरारागे ॥ शरण सुलभ शुद्ध सुकृती सुतपस सौर सर्वशास्त्र अम्बर सुलो-

चन सहस्रभास। सुन्दर सुवर्ण बाहु शून्य श्वेत सवि
विष्ट शूरसेन सात्यक शरीर धृत सुखरास॥ स्वसन स-
हस्र जिष्णु सात्यकेय सप्तजीह सुराध्यक्ष सुरानन्द स-
त्परायण सुबास। स्वश्रुति सुकृति सुधिसन्धि मन शंख
भृत सतावृत सतमूर्त्ति देहु जानकी हुलास ४१। ३५
॥ पस्तोतालेसोरठरागे॥ जय सर्वतोमुख सदा योगी सर्वसर्ग
परात्परं। सद्गति सर्भ सुभोत सर्वग सर्वविजयी श्रीबरं॥
सस्तासुघोष शरीरभूत सुसत्यधर्म्म परायणं। सम्बर्त्त
सदूगति सिद्धिसाधन जयति ते नारायणं ४२। ३६॥
तिताला बिहाग रागे॥ सहस शीशजय सहस चरणध्रुव॥
जयति सिद्धि संकल्प सुकृत श्रुव १ जय संक्षेप जयति
संन्यासा॥ जय सहिष्णु सर्वासु सुश्रासा २ जय सतश्व
जय सप्तबाहना॥ जयसुबीर सुर शत्रुदाहना ३ सिंह
सुभाव शिखंडी नायक॥ समैसर्व लक्षण शुभदायक ४
जयसुकृतात्म सुवर्णस्वयम्भू॥ जय सिद्धार्थ शिवस्था श-
म्भू ५ जय सुमेध जय जयति स्वयंमनु॥ करु निबाह
सियनाह दासप्रनु ६। ४३। ३७॥ तिताला बिहागरागे॥ जय
हलधरणहलायुध हविहरि हृषीकेश हितकारी। हेतु हंस
हुत भोक्त हुताशन जय हेमांग मुरारी॥ हेम गर्भहुत हि-
रणचक्षु हर हरिदलहेतु बिचारी। अशरण शरण भरण
सुख सम्पति जय जय अवधबिहारी १।४४। ३८ जयति
राम ऋतुरत्नगर्भ रवि राघव श्रीरघुनन्दन। जयति रजो
तिजरुद्ररमापति रमारमण जगबन्दन॥ जय रणरंग
जयति रणकर्कश जय दशशीश निकन्दन। जय रणधीर
धीर धुरधारण जयति अमर उर चन्दन २। ४५। ३९

रघुकुलमणि रघुबंश बिभूषण अशरण शरण मुरारी।
जयति रघूत्तम रवण रमेशा रुचिरांगद रुचि कारी॥
रत्ननाभ रक्षोभि ऋद्धिदा रोहित ऋद्धि बिहारी। जय र-
जोति रबिलोचन जयरबि जय रथांग करधारी ३।४६।४०
रक्षण जयति रत्नासन दासन हेत सदा अवतारी। जय
ब्रह्मण्य चतुर्गति तेजस जयबैकुण्ठ बिहारी॥ तारन
तेज कृतज्ञ खड्गधर तत्त्वंतत्त्व बिचारी। दासपवाँर सदा
बलिहारी हूजैबिरद सँभारी ४।४७।४१ सब देवन
में श्रेष्ठ रामइति देखा सुना बिचारी। सब नामन में श्रेष्ठ
रामइति भनत अष्टदश चारी॥ दूजो और न करता
जगको सब बिधि अवधबिहारी। दासपवाँर सदाब-
लिहारी हूजै बिरद सँभारी ५।४८।४२॥ झपताले
शंकराभरण रागे॥ जयति ओंकार ग्वंकार राकार रामेश पर-
मेश सर्वेश श्रीराम राया॥ जयति माकार माधार त्रय
रूपिणी जक्त आधार श्री जानकी जक्तमाया १ ब्रह्म
अबिकार श्रुतिसार साकार सो सर्व संसार आकार का-
रक कहाया॥ नित्त नूतननई सृष्टि जे निर्मई पूर्ण तेजो-
मई जयतिते भूमिजाया २ देव शिरताज रघुबंश मह-
राजमणि जक्त महराजजू कीजिये छोह छाया॥ युगल
पदपङ्कजं ध्याय जन जानकी जानकी जानकीईश शरण
गताया ३।४९।४३ बिनय सियराम सुखधाम आराम
प्रद सुजन बिश्राम निजधाम मनकाम दाता॥ जपै जो
नेमसों क्षेमपावै सोई प्रेम अधिकार पै चाहिये प्रभु सो-
हाता १ जो न कछु मांगि हैं नहीं कछु खांगि हैं लागि हैं
नेह सियराम पद अम्बुजाता॥ दासदुख द्रवन श्रीराम

करुणा भवन श्रवन करु बिनै जन जयति श्रीजक्त त्रा-
ता २ कमलकर छाँहकरु चित्त से चाहकरु जयति सि-
यनाह निर्बाह करु नेहनाता ॥ जयति जै जानकी ईश
जन जानकी ईश जे जानकी जयति जै जनकमाता ३।
५०।४४॥ तिताला बिहागरागे ॥ फाल्गुन कृष्णत्रयोदशि
पाई ॥ शिवरात्री सन्तन सुखदाई १ सम्बत वनइससै
छत्तीसा ॥ बिबिकरजोरि नाइ पद शीसा २ बिनैबाटिका
साजि सुनाई ॥ प्राणनाथ रघुनाथहि भाई ३ कृपासहित
करधस्यो जानकी ॥ जयति जयति करुणानिधान की४।
५१।४५ रायबरेली जिलामनोहर तामें जोहवै ग्रामा।
डालामऊ परगना सुन्दर सोई रियासत धामा ॥ मन्दिर
राम जानकी तामें बसत जानकी तामा। निकट रमापति
लिखीहाजिरी जपत रमापति नामा १४६ ॥

इतिश्रीरामविनयबाटिकास्तोत्रस्यपवाँरवंशोद्भवभवानीप्रसादात्मजश्रीरामचन्द्र
पादानुरागीजोहवैधीशजानकीईशचरणसेवकजानकीप्रसादकृतशुभम् ॥

---